भारत की सांस्कृतिक एकता में हिंदी का योगदान

डॉ. सरोज सिंह
संप्रति: सहायक प्राध्यापिका (हिंदी विभाग)
श्री शंकरलाल सुंदरबाई शासुन जैन महिला महाविद्यालय
टी.नगर, चेन्नै- 600017
E-mail: sarojsingh@shasuncollege.edu.in
संपर्क: 7871751775

संस्कृति, निहित मूल्यों, विश्वासों, दृष्टिकोणों, कला और साहित्य जैसे विभिन्न रूपों को दर्शाती है। वे इसके घटक हैं। विभिन्न आलोचकों और विद्वानों ने इसका विश्लेषण करने का भरसक प्रयास किया है। लेकिन समग्र रूप से जो विचार सामने आता है वह यह है कि संस्कृति बौद्धिक विकास या लोगों के तौर-तरीकों की स्थिति है। इसे ऐसी किसी भी वस्तु के रूप में संदर्भित किया जा सकता है जो मनुष्य के विकास को प्रभावित करती है। यहाँ यह बताना भी आवश्यक है कि जब हम भारतीय संस्कृति का उल्लेख करते हैं तो हमारा तात्पर्य निश्चित रूप से केवल हिंदू संस्कृति से नहीं होता, बल्कि भारत के लोगों द्वारा विरासत में मिली संस्कृति से होता है, चाहे वे हिंदू हों, मुस्लिम हों या अन्य। भारतीय संस्कृति अपने विविध समुदायों के बीच विविधता और अंतर से परिपूर्ण है। लेकिन लोग एक अडिग कारक के साथ भली भाँति बंधे हैं, जिन्हें वे सभी साझा करते हैं। भारत एक ऐसा सांस्कृतिक विविधता वाला देश है जहाँ विभिन्न धर्मों, भाषाओं, वर्णों, खान-पान, वेशभूषा आदि की विविधताओं वाले लोग सौहार्दपूर्वक निवास करते है। इन सभी को अपने-अपने मतों के अनुसार पूजा-पद्धति अपनाने और अनुसरण करने का पूर्ण अधिकार प्राप्त है। इन सभी धर्मों की मान्यताओं एवं विचारों में पर्याप्त अंतर होते हुए भी सभी लोग परस्पर प्रेम और सौहार्द से रहते हैं। यही प्रेम और सौहार्द की भावना, भारत की प्राचीन समेकित संस्कृति की अद्वितीय विशेषता है।

संस्कृति को किसी देश की जीवन शैली, आचार-विचार और सामाजिक व धार्मिक प्रवृत्तियों आदि का परिचायक के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। एक देश का साहित्य उस देश की सांस्कृतिक एकता एवं संपूर्ण जन समुदाय की चित्तवृत्तियों को पूरी तरह से परिलक्षित करता है। भारत एक विविधतापूर्ण देश है, अर्थात, भारत एक राजनीतिक स्थान के रूप में विभिन्न संस्कृतियों की एक बड़ी संख्या का गृह है; फिर भी, किसी चमत्कारिक तरीके से, जब हम अन्य लोगों से मिलते हैं और एक-दूसरे को प्रणाम करते हैं, तो हम सभी अपने आप को एक ही राष्ट्रीयता के मानते हैं। हां, कुछ अपवाद अवश्य हैं, लेकिन कुल मिलाकर, हम में से अधिकांश लोग इस बात को भली-भाँति जानते हैं कि मूल रूप से किसी भी भारतीय की कम से कम 25 विभिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से संबद्धता हो सकती है। किसी भी देश का उसके विशिष्ट अवधि का साहित्य उस देश की जनता की सांस्कृतिक विविधता के चलते भिन्न हो सकता है। उदाहरणार्थ, विशेषकर भारतीय संस्कृति में महाभारत, रामायण, वेद, उपनिषदों आदि का महत्व साहित्यिक परिदृश्य की तुलना में अधिक धार्मिक है। “प्राचीन भारतीय समाज में उपनिषदों की रूपक कथाएँ, महाभारत के उपाख्यान बौद्ध जातक कथाएँ, राजा विक्रमादित्य, राजा भोज जैसे प्रसिद्ध एवं लोकप्रिय राजाओं से संबंधित कहानियाँ कहने-सुनने की परंपरा विद्यमान थी। पुराणों में इस परंपरा का विकसित रूप मिलता है। पुराण काल में आर्यों की उर्वर कल्पना शक्ति ने असंख्य नए देवी-देवताओं की सृष्टि

की और उनसे संबंधित अनेक प्रकार की कहानियाँ पढ़ी गई। आज का बुद्धिवादी पाठक इन पौराणिक कथाओं को कपोल-कल्पित कहकर चाहे उनकी उपेक्षा कर दे किन्तु प्राचीन भारतीय जनता का इन कहानियों में अटल विश्वास था।"[1] अत: इन सभी कथाओं की मूल चेतना, भारतीय भाषाओं में लगभग एक समान ही है। हिन्दी कहानियों के समान ही अन्य भारतीय भाषाओं में भी गहन आस्था, परस्पर सौहार्द तथा कल्याणकारी भावना आदि के सकारात्मक तत्वों का समावेश दृष्टव्य है। 'संस्कृति' की अवधारणा के परिप्रेक्ष्य में, मानव जीवन में सर्वोत्तम गुणों को आत्मसात करना ही संस्कृति माना गया है। अत: संस्कृति, दैहिक व वैचारिक योग की वह आंतरिक अवस्था मानी गई है, जिसमें मानव विकास पाता है और साथ ही विचार–व्यवहार एवं रुचियों आदि के परिष्करण से सभ्यता विकास पाती है।

भारत की संस्कृति, विशेष रूप से साहित्य सृजन की दृष्टि से भी नि:संदेह अत्यंत समृद्ध रही है। वैदिक साहित्य के अंतर्गत चारों वेद (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद) पुराण, ब्राह्मण, सुत्र, वेदांग एवं स्मृतियां समाहित हैं। जातकों एवं सुत पिटकों में बौद्धकालीन तथा आगम में जैन साहित्य का भी समावेश दृष्टव्य है। अन्य प्रमुख साहित्यिक कृतियों में मुख्यत: रामायण, महाभारत, अभिज्ञान शाकुन्तलम्, मालविकाग्निमित्रम, कुमारसम्भव, रघुवंशम, मेघदूतम, ऋतुसंहार, कथासरित्सागर, गीत-गोविन्द, मुद्राक्षस, मृच्छकटिकम्, किरातार्जुनियम, देवीचन्द्रगुप्तम, विक्रमोर्वशीयम्, अमरकोष, राजतरंगिणी, सूरसागर, रामचरितमानस, कामायनी, साहित्य लहर, आदि सम्मिलित हैं।

इनके अतिरिक्त भारत की विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में भी साहित्य का सृजन हुआ है, जिनसे भारत की साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विरासत की पूर्ण समृद्धि का भान होता है। भारत भूमि अनेक महापुरुषों की जन्मस्थली भी रही है। श्रीराम, बुद्ध, महावीर स्वामी, गुरु नानक, कबीर, अशोक, अकबर, सूरदास, मीराबाई, दयानंद सरस्वती, नामदेव, संत तुकाराम, प्रभु चैतन्य, विवेकानन्द, रामकृष्ण परमहंस, राजा राममोहन राय आदि जैसे सत्य, अहिंसा, सहिष्णुता, शांति, पवित्रता, आदर्श प्रेम, सौहार्द, आपसी भाईचारे, विश्व बंधुत्व, त्याग एवं समर्पण के मार्ग पर मानव मात्र को चलने की प्रेरणा देनेवाले महापुरुष भारत की पावन भूमि पर ही अवतरित हुए थे। साहित्य के अतिरिक्त भारतीय संस्कृति कला एवं शिल्प के संदर्भ में भी पर्याप्त समृद्ध रही है।

पर्यावरण संरक्षण के प्रति भी भारतीय संस्कृति के अथाह प्रेम का अनुमान इसी तथ्य से लगाया जा सकता है कि यहाँ पेड़, पौधे, पशु, पक्षी, पहाड़, पत्थर, इत्यादि आस्था एवं पूजा के पात्र हैं तथा गाय एवं नदियों को माता की उपाधि से अलंकृत किया गया है। यह कहा जा सकता है कि भारतीय संस्कृति में मनुष्य को प्रकृति के साथ जोड़ने के वे सभी प्रयत्न दृष्टिगोचर होते है, जिनकी वर्तमान पर्यावरण संरक्षण के संदर्भ में नितांत आवश्यकता का अनुभव किया गया है। ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र में भी राजनीति एवं प्रशासन के क्षेत्र में आवश्यक दिशा-निर्देश देने हेतु कौटिल्य ने जहां अर्थशास्त्र की रचना की वहीं पाणिनी ने हिन्दी के व्याकरण की रचना की।

जैसा कि भारत एक बहुसांस्कृतिक, बहुभाषी और बहुधार्मिक देश है, भारत में बोली जाने वाली सभी भाषाएँ महान और अति महत्वपूर्ण हैं। सभी भारतीय भाषाएँ, क्षेत्रीय विविधताओं और पहचानों की प्रतीक हैं और क्षेत्रीय विविधताओं को संरक्षित करने का वादा भी करती हैं। अत: इस प्रकार देश व संस्कृति को एकजुट रखने के लिए भाषाएँ अति महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इसलिए भाषाओं के क्षेत्र में ऐसा कुछ भी नहीं किया जाना चाहिए, जिससे हमारा देश विभाजित हो जाए क्योंकि यह भाषा ही है जो हमें एकीकृत कर रखती है। इसीलिए क्षेत्रीय पहचान, विविधता और गौरव की रक्षा के लिए सभी क्षेत्रीय भाषाओं को उचित स्थान और मान्यता सदैव मिलनी ही चाहिए। हमारे देश ने न केवल 1960 के दशक में स्वतंत्रता के बाद बल्कि 1940 के दशक में स्वतंत्रता से पहले भी भाषा की समस्या का सामना किया है। भाषा का मुद्दा प्रमुख था। आज़ादी से पहले गैर हिंदी भाषी राज्यों और लोगों के साथ-साथ दक्षिणी राज्यों पर हिंदी थोपने की भावना ने गति पकड़ी और दक्षिणी राज्यों और

हिंदी के अनिवार्य शिक्षण के मकसद को रोकने वाली शक्तियों का कड़ा विरोध हुआ। हिन्दी विरोधी विचारधाराओं में तमिलों का विरोध अत्यंत उग्र था। जिसके समाधान हेतु महात्मा गांधी ने दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा (मद्रास) की स्थापना की।

आधुनिक युग से ठीक पहले दुनिया का अधिकांश भाग उपनिवेशों में विभाजित था। तो उस अवधि के दौरान जब देशों ने आज़ादी हासिल करना शुरू किया, जो लोग इसे गढ़ रहे थे, कुछ भाषाओं में परिस्थितियों पर विचार-विमर्श कर रहे थे। स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए जिन भाषाओं का प्रयोग किया जा रहा था, वे अंग्रेज़ी और हिंदी (उर्फ हिंदुस्तानी) थीं। "जहाँ जब हिन्दी-उर्दू का सवाल उठा तब सर सैयद अहमद, जो अंगरेज़ी से मेल-जोल रखने की विद्या में एक ही थे, हिन्दी विरोध में और बल लाने के लिए मज़हबी नुस्खा भी काम में लाये। अंगरेज़ों को सुझाया गया कि हिन्दी हिंदुओं की ज़बान है, जो 'बुतपरस्त' हैं और उर्दू, मुसलमानों की जिनके साथ अंगरेज़ों का मज़हबी रिश्ता है- दोनों सामी या 'पैगंबरी' मत के मानने वाले हैं।"[2]

उन भाषाओं का उपयोग करने का कारण यह रहा था कि स्वतंत्रता के लिए बहस दो दलों, ब्रिटिश (अंग्रेज़ी) और उत्तर भारतीयों (हिंदी) के साथ थी। चूँकि स्वतंत्रता के लिए सभी प्रमुख कार्य भारत के उत्तरी भाग में किए जा रहे थे, इसीलिए देश के संस्थापक सदस्यों को भारत के परिधीय हिस्सों को बहस से बाहर करना पड़ा क्योंकि इससे आंदोलन जटिल हो सकता था। "इस अर्थ में, संस्कृति कुछ ऐसी चीज का नाम हो जाता है, जो बुनियादी और अंतर्राष्ट्रीय है। फिर, संस्कृति के कुछ राष्ट्रीय पहलू भी होते हैं। और इनमें कोई संदेह नहीं कि अनेक राष्ट्रों ने अपना कुछ विशिष्ट व्यक्तित्व तथा अपने भीतर कुछ खास ढंग के मौलिक गुण विकसित कर लिए हैं।"[3]

भारत की यही सांस्कृतिक विविधता संपूर्ण भारतीय जीवन दर्शन का अति महत्वपूर्ण बिन्दु है और साथ ही राष्ट्रीय एकता का परिचायक भी। यही सांस्कृतिक विविधता भारत की 'अनेकता में एकता' बंधुत्व सूत्र के राष्ट्रीय हित के उद्देश्यों की पूर्ति करता है। भारत के दक्षिण क्षेत्र में द्रविड़ संस्कृति, उत्तर भारत में आर्य संस्कृति तथा पूर्वोत्तर भारत में आदिम संस्कृतियाँ विद्यमान हैं। जो एक दूसरे से सामाजिक व भाषाई स्तर पर पूर्णत: भिन्न हैं परंतु इसके उपरांत भी ये भारतीय जनसंघ के अंतर्गत देश के सर्वांगीण विकास में सहयोगी हैं। समय-समय पर भारतीय जनता में फूट डालकर इनकी राष्ट्रीय सांस्कृति एकता को तोड़ने का भरपूर प्रयास किया जाता रहा है। दुर्भाग्यवश भाषा, धर्म, संप्रदाय, संस्कृति आदि के भेद द्वारा वैमनस्य की संकीर्ण भावना को विदेशी आंक्रांताओं एवं असामाजिक तत्वों ने प्रोत्साहन दिया। अतः इस प्रकार भारत राष्ट्रीय स्तर पर अपने लोकतान्त्रिक व्यवस्था के कारण, जनता की सांस्कृतिक विविधता के पश्चात भी एकता के दृढ़ सूत्र में बंधा है। शांति, मैत्री और बंधुत्व के अनुपम संदेश के साथ संपूर्ण विश्व में भारत ने ख्याति प्राप्त की है और हिन्दी ने इस दिशा में मुख्य भूमिका निभाई है। इस प्रकार विश्व की संस्कृतियों के ऐतिहासिक विकास में हिंदी अविश्वसनीय रूप से महत्वपूर्ण है और न केवल सम्मान के योग्य है, बल्कि अध्ययन करने योग्य भी है। विश्व इतिहास या भाषाओं में रुचि रखने वाला कोई भी व्यक्ति हिंदी के विषय पर थोड़ा गहन अध्ययन कर सकता है।

यह देखते हुए कि हिंदी देश को बनाने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली दो भाषाओं में से एक थी, सभी नई लोकतांत्रिक प्रणालियाँ इसका उपयोग करने के बारे में चर्चा कर रही थीं, और इसने नए राष्ट्र के लिए स्वर निर्धारित किया। सिविल सेवाओं को इसकी गहन आवश्यकता हुई। पत्रकारों को हिंदी में लिखने की ज़रूरत थी, जनता को हिंदी में शिक्षित करने के लिए बुद्धिजीवियों की ज़रूरत थी, मनोरंजन करने वालों को हिंदी के साथ-साथ उर्दू में भी मनोरंजन के लिए बुलाया गया था। स्थानीय अदालतों को विभिन्न मामलों की सुनवाई हिंदी में करनी थी। साहित्य का एक संग्रह बनाने के लिए लेखकों को हिंदी में लिखने के लिए कहा गया था, नया राष्ट्र इसमें शामिल हो सकता है। यह सब सबसे स्पष्ट तरीकों से जनता तक नहीं पहुँचाया गया था। ऐसा लगता है कि यह आशा की गई थी कि उत्तर से दक्षिण, पूरब से पश्चिम तक सभी भारतीय हिंदी और अंग्रेज़ी में महारत हासिल करेंगे

और देश को कुछ प्रगति के मार्ग पर आगे ले जाएँगे। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद, सभी राष्ट्र सफल होने के लिए बहुत दबाव में रहते हैं। भारत देश, इस बात के प्रमाण के कुछ उदाहरणों में से एक है कि एक राष्ट्र की कई संस्कृतियों के बीच सामंजस्य संभव है।

हम दूसरे देशों के सीमाओं को सांझा कर साथ रहते हैं। वे राष्ट्र उतने भाग्यशाली नहीं हैं जितना कि भारत और भारत को अवांछनीय अतिप्रवाह से निपटना पड़ रहा है, लेकिन यदि आप इसे देखें, तो भारत हर प्रकार से लचीला और अनुकूल है। इसमें गलत चीजों को सही करने की हर क्षमता है और यह क्षमता कुछ सामान्य भाषाओं के होने से ही आती है। इस प्रकार हिंदी की सांस्कृतिक प्रासंगिकता इसके राजनीतिक इतिहास से उपजी है जिसने अपने इतिहास में एक बहुत ही महत्वपूर्ण अवधि के दौरान सभी को एक साथ बांधने के लिए हिंदी का इस्तेमाल किया।

हिन्दी भाषा, भारतीय संस्कृति एवं परंपरा को प्राण वायु देने वाली भाषा है। हिन्दी भाषा का इतिहास इस तथ्य को पुष्ट करता है कि हिन्दी को सामाजिक-सांस्कृतिक एवं राजनीतिक पहचान दिलाने में डॉ॰ श्यामसुंदर दास, पंडित मदन मोहन मालवीय, राजा शिवप्रसाद सितारे 'हिन्द', राजा लक्ष्मण सिंह, राजा रामपाल सिंह, राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन, महात्मा गांधी, दयानन्द सरस्वती सहित विदेशी विद्वानों फ्रेडरिक पिंकाट, फादर कामिल बुल्के, विलियम केरे, जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन आदि हिन्दी समर्थकों का सहयोग रहा, जिनका सहयोग, समर्थन पाकर हिन्दी भाषा ने संघर्ष का लंबा मार्ग तय किया। "जनता की चित्तवृत्ति बहुत कुछ राजनीतिक, सामाजिक, सांप्रदायिक तथा धार्मिक परिस्थिति के अनुसार होती है। अतः कारण स्वरूप इन परिस्थितियों का किंचित दिग्दर्शन भी साथ ही साथ आवश्यक होता है। इस दृष्टि से हिन्दी साहित्य का विवेचन करने में यह बात ध्यान में रखनी होगी कि किसी विशेष समय में लोगों में रूचि विशेष का संचार और पोषण किधर से और किस प्रकार हुआ।"[4]

संपूर्ण देश की स्वतंत्रता से लेकर हिन्दी ने अनेक महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ एकत्रित की हैं। भारत सरकार द्वारा विभिन्न विकास योजनाओं व नागरिक सेवाएं आदि प्रदान करने में केवल हिंदी भाषा के प्रयोग को ही प्रोत्साहित व बढ़ावा दिया जा रहा है। इसमें तनिक भी संदेह नहीं कि हिंदी तथा प्रांतीय भाषाओं के माध्यम से हम बेहतर जन सुविधाएँ सामान्य लोगों तक पहुँचा सकते हैं। इसके साथ ही भारत के विदेश मंत्रालय द्वारा ''विश्व हिंदी सम्मेलन'' और अन्य अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों के माध्यम से हिंदी को पूर्णत: अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रिय बनाने का उत्तम कार्य किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक वर्ष सरकार द्वारा ''प्रवासी भारतीय दिवस'' भी मनाया जाता है जिसमें विश्व भर में रहनेवाले प्रवासी भारतीय अपने अपनेस्तर पर प्रतिभागिता करते हैं। विदेशों में रह रहे प्रवासी भारतीयों की उपलब्धियों के सम्मान में आयोजित इस कार्यक्रम से भारतीय मूल्यों का संपूर्ण विश्व में और भी व्यापरस्तर पर विस्तार हो रहा है। विश्वभर में करोड़ों की संख्या में भारतीय समुदाय के लोग एक संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी का ही प्रयोग कर रहे हैं। अत: इससे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी को एक नई पहचान मिली है। हमारे देश का सौभाग्य है कि यूनेस्को की सात भाषाओं में हिंदी को भी मान्यता मिली है। अतेव भारतीय विचार और संस्कृति का वाहक होने का श्रेय हिन्दी को ही जाता है। आज संयुक्त राष्ट्र जैसी संस्थाओं में भी हिंदी की गूंज सुनाई देने लगी है।

इस प्रकार भारत की समेकित संस्कृति एक जीवंत एवं प्रगतिशील संस्कृति है। इसकी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत उसका गौरव और अभिमान है, जिसमें मनुष्य के चरित्र निर्माण से लेकर उसके जीवन के समस्त रचनात्मक पक्षों पर न केवल गंभीरतापूर्वक विचार किया गया है, अपितु आदर्शों एवं सुकृत्यों द्वारा उन्हें मूर्त रूप में परिणित भी किया गया है और हिन्दी की ही इसमें बहुमूल्य भूमिका रही है।

संदर्भ सूची

1) समेकित भारतीय कहानियाँ, संपा. डॉ॰रमेश गौतम, पृष्ठ-1
2) हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, पृष्ठ-294
3) संस्कृति के चार अध्याय, रामधारी सिंह दिनकर, पृष्ठ-6
4) हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, पृष्ठ-15